विश्व शान्ति में त्योहारों की सार्थकता

मानव जगत में हर एक प्राणी की खोज सुख और शान्ति की होती है। इस सृष्टि पर विभिन्न रूपों में मनाये जाने वाले धार्मिक पर्व किसी न किसी रूप में विश्व शान्ति और एकता का संदेश देते है। संस्कृति और मानवीयता की आदि अनादि में सच्ची शान्ति होने के कारण बदलते परिवेश और बदलती नित नयी जीवनशैली के बावजूद मनुष्य की आन्तरिक पिपासा, जिज्ञासा और वेदना शान्ति और सुख की ही होती है। आज उच्च शिखर पर चढ़ते नवीन आविष्कारों द्वारा निर्मित संसाधनों का उद्देश्य भी मनुष्य को सुख और शान्ति ही मुहैय्या कराना है। आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है। बढ़ती मनुष्य की इच्छाएं तथा ललक ही आविष्कारों को जन्म देती है। प्राचीन काल में विज्ञान की इतनी खोज न होने के बाद भी लोग शान्ति दूत के पुरोधा थे। लोग पेड़ों की शीतल छाया और कूपों के ठंडे पानी से अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करते थे। अनाज की इतनी उपज नहीं थी फिर भी लोग आज की भेंट में स्वस्थ थे। प्रेम, एकता, विश्व बन्धुत्व की मजबूत डोर साधनों की कमी का एहसास नहीं होने देते थे। हवाई यात्रायें तो असम्भव थी परन्तु अन्तर्जगत की यात्रा से भौतिक साधनों के बजाए अधिक तीव्रगामी थे। इसकी मुख्य वजह आन्तरिक सशक्तिकरण था।

नि:संदेह यह सत्य है कि भाग्य विधाता कहे जाने वाले विज्ञान के युग ने अपने आविष्कारों के चमत्कार से पूरे विश्व को आश्यर्चजनक और जादुई पहाड़ पर खड़ा कर दिया है। पूरे विश्व को, एक गाँव तो क्या मुट्ठी में कैद करने में महारत हासिल की है। सूचना प्रौद्योगिकी किसी भी सूचना को पूरे कवश्व में कुछ ही समय में संदेश देने की हैसियत रखता है। गर्मी को ठंडी और ठंडी को गर्मी में बदला जा सकता है। कम्प्यूटराईज युम में मनुष्य की सशक्त स्थिति तो नहीं बनायी जा सकती, परन्तु बाह्य चित्र अवश्य बनाया जा रहा है। कुल मिलाकर भौतिकता के युग में भौतिक जगत का कोई भी कार्य असम्भव नहीं रहा है।

बिडम्बना यह है कि सुख शान्ति और समृद्धि के इतने साधन होने के बावजूद चैन की नींद लोगों को उपलब्ध नहीं है, सोने के लिए नींद की गोलियां लेनी पड़ती है। एअरकंडीशनर में बैठकर भी मनुष्य की तनावयुक्त मानसिक स्थिति और रक्तचाप बढ़ा हुआ है। सच्चे सुख-शान्ति से निराशा हाथ लगी है। लाईलाज नयी बिमारियों का जन्म हुआ है, तनाव, आपसी द्वेष, नफरत, घृणा, पारिवारिक विघटन, पश्चिमी देशों के अन्धानुकरण सुरसा के समान मुंह खोले खड़ा है। आत्मिक क्षरण हुआ है, एकता खंडित हुई है, अत्याचार, भ्रष्टयाचार सागर की लहरों की भांति हिलोरें मारकर मनुष्य को आन्तरिक रूप से निर्वल बना दिया है। ऐसी नयी समस्याओं का जनम हुआ है जिनका इतिहास में कही जिक्र तक नहीं किया गया है। ऐसे परिप्रेष्य में विश्व शान्ति तो दूर, स्वयं की शान्ति कोसों दूर चली गयी है।

आज के सन्दर्भ में विश्व शान्ति की खोज : 10 दशक पहले जन संहारक हथियारों का संचयन अशांति का प्रबल कारण माना जाता था परन्तु आज के परिप्रेक्ष्य में कुछ ही मिनटों में सृष्टि का समूल नाश करने वाले जन संहारक हथियारों का भंडारीकरण विश्व शांति के संतुलन का आधार मनाना जा रहा है जब कि य ज्ञात होना चाहिए कि हथियारों का उपयोग करने वाले व्यक्ति के मन में यदि शान्ति नहीं होगी तो कभी भी अशांति वश इन हथियारों का इस्तेमाल हो सकता है। जिससे पूरी मानव जाति का अस्तित्व ही समाप्त हो सकता है। इसबसे बड़ा खतना और अशांति का कारण बढ़ते अत्याधुनिक जनसंहारक हथियार हैं।

आसुरीयता के पर्दे पर दैवी संस्कृति के सपने देखे जा रहे है। अशांति के टीले से शांति का पथ ढूंढ़ा जा रहा है परन्तु अपने अन्दर देखने की क्षमता का अभाव है। विश्व शांति का हल स्व के अन्दर निहित है। आवश्यकता है उसे उजागर करने की। इसी तरह एक बार देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोती लाल नेहरू एक सभा आयोजित कर रहे थे। इसमें शोर होने लगा उन्होंने शान्त होने के लिए कहा। इसपर सभी ने एक दूसरे को शांत होने के लिए कहने लगे इससे शोरगुल और बढ़ता ही गया। तब मोतीलाल नेहरू ने कहा कि सब अपने आप को शांत करें तो शांति हो जायेगी इसपर सभी ने बोलना बंद किया और शांति हो गयी।

विश्व शांति में महोत्सव की सार्थकता: भारत में मनाये जाने वाले तथा आयोजित होने वले पर्व, महोत्सव और मेले मनुष्यको एकता के सूत्र में तो बांधते ही है वरन आत्म निरीक्षण, आत्म विश्लेषण तथा आत्म सशक्तिकरण करने का सम्बल भी प्रदान करते है। शायद यही कारण है कि भाग्य विधाता कहे जाने वाले विज्ञान के युग में आध्यात्मिक महोत्सव तथा पर्वों की सार्थकता आज भी विविध रूपों में स्वीकार्य है। पिछले एक दश क से लोग पुन: प्रचानी काल की जीवनशैली, राजयोग, योग के पथ पर लौटने लगे है। अब तो पूर्ण रूप से समय की बलवती मांग है कि ऐसे महोत्सवों का व्यापक स्तर पर आयोजन किया जाए जिससे पूरे विश्व में शांति, प्रेम, एकता, नि:स्वार्थता की डोर मजबूत हो ओर एक नये युग का निर्माण हो। परमपिता परमात्मा शिव तभी तो इस धरा पर किये गये श्रेष्ठ कर्मों के यादगार का रहस्य समझा रहे है। जो भी पर्व अथवा जयन्तियां मनाये जा रहे है वह हमारी यादगार स्वरूप है। जब हम देवी देवताओं के रूप में होते है तो इसका वास्तविक रहस्य मालूम होता है। जब हम अपने को शरीर समझते तो हमारी बुद्धि पांच तत्वों के पार नहीं जा पाती है। स्वयं को शरीर समझना माना मृत्यु के समान है। ज्ञानी पुरुष इनका रहस्य जान हर समय अतिन्द्रिय सुख में रहता है। प्रत्येक पर्व और जयन्तियों पर अपने अन्दर के नैन खोल दैवी गुणों से अपनी झोली भरने में लगा रहता है।

परमात्मा का अवतरण तथा उनका दिव्य कर्म होने के कारणा भी हम नदियों के संगम में जाकर अपना पाप धुलने की कोशिश करते है। परन्तु एक कहावत है कि माला फेरत युग भया फिरा न मन का फेर, तनका मनका डार दे करका मन का फेर। हम उस ज्ञान गंगा तथा ज्ञान सागर परमात्मा के कर्त्तव्यों की यथार्थ को नहीं जानते है तो तभी तो स्नान करके अपनी मन को शांत कर लेते है। संगमयुग सर्व युगों में सर्वश्रेष्ठ युग है। राम जैसे पुरूषोत्तम पुरुष भी इसी समय में परमात्मा के सदमार्ग पर चलकर अपने को दैवी गुणों से सजाया था इसलिए वे भगावान की उपाधि से जाने जाते है। इसी यादगार को गंगा यमुना के संगम पर स्नान करने जाते है। अब वक्त आ गया है कि पुन: हम परमात्मा द्वारा बहाये जा रहे ज्ञान सरिता में स्नान करके अपने को देवी देवताओं तुल्य बनायें।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com